कृषि विकास में परिषद का योगदान अहम

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का स्थापना दिवस मनाया

भास्कर न्यूज. भरतपुर

भरतपुर. स्थापना दिवस के कार्यक्रम में मौजूद कृषि विशेषज्ञ।

सरसों अनुसंधान निदेशालय की ओर से बुधवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि अनुसंधान एवं तकनीकी विकास के माध्यम से हरित क्रांति एवं बाद में कृषि के विकास में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

उन्होंनें कहा कि 1950-51 की तुलना में आज देश का खाद्यान्नों का 4 गुणा, उधानकी फसलों का 6 गुणा, मत्स्य का 9 गुणा, दूध का 6 गुणा उत्पादन बढाने में परिषद के प्रयास कारगर रहे हैं। इससे देश में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा प्राप्त करने में मदद मिली है। इसके साथ ही कृषि में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देकर विज्ञान एवं तकनीकी विकास के लिए उत्कृष्ट कृषि वैज्ञानिकों की टीम तैयार की है। उन्होंनें कहा कि भविष्य की कृषि की चुनौतियों को ध्यान में रखकर उत्पादन बढाने के साथ-साथ किसानों की क्षमता भी बढ़ानी होगी, ताकि खेती से आमदनी बढ़े और खेती लाभ का व्यवसाय बन सके। कार्यक्रम में प्रधान वैज्ञानिक डॉ. यशपाल सिंह, डॉ. बसंत कुमार कांडपाल, डॉ. पीके राय, डॉ. वीवी सिंह, डॉ. केएच सिंह, डॉ. अशोक शर्मा, डॉ. अजय ठाकुर ने विचार रखे। संचालन डॉ. अशोक कुमार शर्मा ने किया।

दैनिक भास्कर 17 जुलाई 2014

उत्पादन के साथ क्षमता भी बढ़ानी होगी

भरतपुर

alwar@patrika.com

सरसों अनुसंधान निदेशालय की ओर से बुधवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का स्थापना दिवस समारोह मनाया गया।

इस अवसर पर हुई बैठक में वैज्ञानिकों ने कृषि विकास में परिषद के योगदान एवं उपलब्धियों तथा भविष्य की चुनौतियों के बारे में प्रकाश डाला। निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह कहा कि अनुसंधान एवं तकनीकी विकास के माध्यम से हरित क्रांति एवं कृषि के विकास में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का उल्लेखनीय योगदान रहा

भरतपुर. कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि।

है। उन्होंने कहा कि भविष्य की कृषि की चुनौतियों को ध्यान में रखकर उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ किसानों की क्षमता भी बढ़ानी होगी, ताकि खेती से आमदनी बढ़े और खेती लाभ का व्यवसाय बन सके। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. यशपाल सिंह ने कीटों में जीनोमिक्स, डॉ. बसन्त कुमार काण्डपाल ने बदलती जलवायु के अनुरूप कृषि, डॉ. पी.के.राय ने जैविक दबावों के प्रबंधन के लिए नई प्रणालियां, डॉ. वी.वी. सिंह ने उत्पादन एवं तेल की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए फसल सुधार, डॉ. के.एच. सिंह ने संकर किस्में एवं इनका भविष्य, डॉ. अशोक शर्मा ने तकनीकी हस्तांतरणः उपलब्धियां एवं संभावनाएं, डॉ. अजय ठाकुर ने सरसों में जीनोम अनुक्रम पर व्याख्यान दिए।

राजस्थान पत्रिका 17 जुलाई 2014

कृषि विकास पर विचार-विमर्श

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का स्थापना दिवस मनाया

भरतपुर, (योगेन्द्र शर्मा): सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा बुधवार को अपने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर आयोजित बैठक में वैज्ञानिकों ने देश के कृषि विकास में परिषद के योगदान एवं उपलब्धियों तथा भविष्य की चुनौतियों के बारें में भावी रणनीतियों पर विचार-विमर्श किया।

निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने स्थापना दिवस व्याख्यान में कहा कि अनुसंधान एवं तकनीकी विकास के माध्यम से हरित क्रांति एवं बाद में कृषि के विकास में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का उल्लेखनीय योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि 1950-51 की तुलना में आज देश का खाद्यान्नों का 4 गुणा, उद्यान की फसलों का 6 गुणा, मत्स्य का 9 गुणा, दूध का 6 गुणा उत्पादन बढ़ाने में परिषद के प्रयासों से

स्थापना दिवस समारोह का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते अतिथि।

देश में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा प्राप्त करने में मदद मिली है। उन्होंने कहा कि राई-सरसों उत्पादन के वर्तमान स्तर को कायम रखना, नाजुक वातावरण में भी उत्पादकता एवं उत्पादन की गुणवत्ता को बढ़ाना, औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना और आज के बहुत ही प्रतिस्पर्धी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यात को बढ़ावा देना निदेशालय के अनुसंधान कार्यक्रमों का भावी दृष्टिकोण है। निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. यशपाल सिंह ने कीटों में जीनोमिक्स, डॉ. बसंत कुमार कांडपाल ने बदलती जलवायु के अनुरूप कृषि, डॉ. पीके राय ने जैविक दबावों के प्रबंधन के लिए नई प्रणालियां, डॉ. वीवी सिंह ने उत्पादन एवं तेल की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए फसल सुधार, डॉ. केएच सिंह ने शंकर किस्में एवं इनका भविष्य, डॉ.अशोक शर्मा ने तकनीकी हस्तांतरण: उपलब्धियां एवं संभावनाएं, डॉ. अजय ठाकुर ने सरसों में जीनोम अनुक्रम पर व्याख्यान दिए।

पंजाब केसरी 17 जुलाई 2014

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का मनाया स्थापना दिवस

न्यूज सर्विस/नवज्योति,भरतपुर

सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा बुधवार को अपने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया।इस अवसर आयोजित बैठक में वैज्ञानिकों ने देश के कृषि विकास में परिषद के योगदान एवं उपलब्धियों तथा भविष्य की चुनौतियों के बारें में भावी रणनीतियों पर विचार विमर्श किया। निदेशालय के निदेशक डॉ.धीरज सिंह ने स्थापना दिवस व्याख्यान में कहा कि अनुसंधान एवं तकनीकी विकास के माध्यम से हरित क्राति एवं बाद में कृषि के विकास में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का उल्लेखनीय योगदान रहा है।उन्होनें कहा कि 1950-51 की तुलना में आज देश का खाद्यान्नों का 4 गुणा, उधान की फसलों का 6 गुणा, मत्स्य का 9 गुणा, दूध का 6 गुणा उत्पादन बढाने में परिषद के प्रयासों से देश में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा प्राप्त करने में मदद मिली है।उन्होंने कहा कि राई -सरसों उत्पादन के वर्तमान स्तर को कायम रखना, नाजुक वातावरण में भी उत्पादकता एवं उत्पादन की गुणवत्ता

भरतपुर में स्थापना दिवस समारोह का द्वीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ करते अतिथि एवं कार्यक्रम को सम्बोधित करते डॉ. धीरज सिंह।

को बढाना, औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना और आज के बहुत ही प्रतिस्पर्धी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यात को बढावा देना निदेशालय के अनुसंधान कार्यक्रमों का भावी दृष्टिकोण है।इस अवसर पर निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. यशपाल सिंह ने कीटों में जीनोमिक्स, डॉ. बसन्त कुमार काण्डपाल ने बदलती जलवायु के अनुरूप कृषि, डॉ. पी.के.राय ने जैविक दबाबों के प्रबंधन के लिए नई प्रणालियां, डॉ. वी.वी. सिंह ने उत्पादन एवं तेल की गुणवत्ता बढाने हेतु फसल सुधार, डॉ. के.एच. सिंह ने संकर किस्में एवं इनका भविष्य, डॉ. अशोक शर्मा ने तकनीकी हस्तांतरणः उपलब्धियां एवं सम्भावनाएं, डॉ. अजय ठाकुर ने सरसों में जीनोम अनुक्रम पर व्याख्यान दिए। संचालन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अशोक शर्मा ने किया।

दैनिक नवज्योति 17 जुलाई 2014

भरतपुर के सरसों अनुसंधान केन्द्र में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस पर निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

कृषि में चुनौतियों पर मंत्रणा

भरतपुर 16 जुलाई (निस)। सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा बुधवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में वैज्ञानिकों ने कृषि विकास में परिषद के योगदान एवं उपलब्धियों तथा भविष्य की चुनौतियों के बारे में भावी रणनीतियों पर विचार किया गया।

निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरजसिंह ने स्थापना दिवस पर अपने व्याख्यान में कहा कि अनुसंधान एवं तकनीकि विकास के माध्यम से हरित क्रांति एवं बाद में कृषि के विकास में भारतीय कृषि परिषद का उल्लेखनीय योगदान रहा है

उन्होंने बताया कि कृषि में उच्च शिक्षा को बढावा देकर विज्ञान व तकनीकि विकास के लिए उत्कृष्ट कृषि वैज्ञानिकों की टीम तैयार की गई है। डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि वर्तमान स्तर को कायम रखना एवं नाजुक वातावरण में भी उत्पादकता एवं उत्पादन की गुणवत्ता बनाये रखना व प्रतिस्पर्धी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यात को बढावा देना निदेशालय के अनुसंधान कार्यक्रमों का भावी दृष्टिकोण है। इस अवसर पर निदेशायल के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. यशपाल सिंह ने कीटों में जीनोमिक्स, डॉ. बसंतकुमार काण्डपाल ने बदलती जलवायु के अनुरूप कृषि, डॉ. पीके राय ने दबाबों के प्रबंधन के लिये नई प्रणालियां, डॉ. वीवी सिंह ने उत्पादन एवं तेल की गुणवत्ता बढाने हेतु फसल सुधार, डॉ. केएच सिंह ने संकर किस्म एवं इनका भविष्य पर व्याख्यान दिये।

राष्ट्रदूत 17 जुलाई 2014